SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं हिन्दी उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (ग्वालियर नगर के विशेष संदर्भ में)

अंशु श्रीवास्तव, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र,
महर्षि यूनीवर्सिटी ऑफ इन्फॉरमेशन टेक्नॉलोजी, लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

अंशु श्रीवास्तव, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र,
महर्षि यूनीवर्सिटी ऑफ इन्फॉरमेशन टेक्नॉलोजी,
लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/05/2022
Revised on : -----
Accepted on : 04/06/2022
Plagiarism : 08% on 30/05/2022

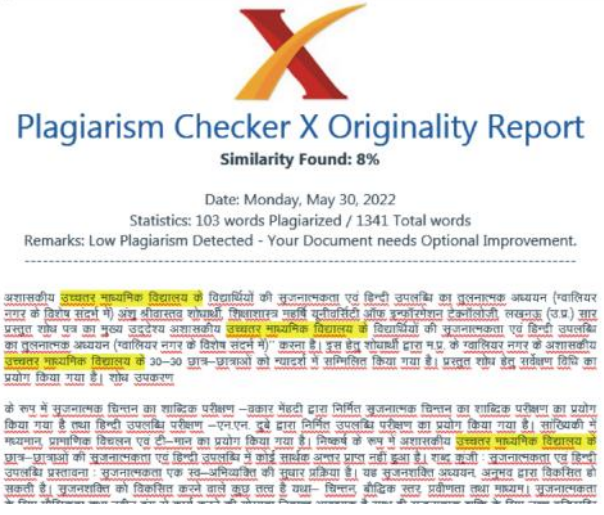

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 8%

Date: Monday, May 30, 2022
Statistics: 103 words Plagiarized / 1341 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं हिन्दी उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (ग्वालियर नगर के विशेष संदर्भ में) अंशु श्रीवास्तव शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र महर्षि यूनीवर्सिटी ऑफ इन्फॉरमेशन टेक्नॉलोजी, लखनऊ (उ.प्र.) सार प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं हिन्दी उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (ग्वालियर नगर के विशेष संदर्भ में)" करना है। इस हेतु शोधार्थी द्वारा म.प्र. के ग्वालियर नगर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 30–30 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध उपकरण

के रूप में सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण –वकार मेंहदी द्वारा निर्मित सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण का प्रयोग किया गया है तथा हिन्दी उपलब्धि परीक्षण –एन.एन. दुबे द्वारा निर्मित उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकी में मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष के रूप में अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता एवं हिन्दी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है। शब्द कुंजी : सृजनात्मकता एवं हिन्दी उपलब्धि प्रस्तावना : सृजनात्मकता एक स्व–अभिव्यक्ति की सुधार प्रक्रिया है। यह सृजनशक्ति अध्ययन, अनुभव द्वारा विकसित हो सकती है। सृजनशक्ति को विकसित करने वाले कुछ तत्व है यथा– चिन्तन, बौद्धिक स्तर, प्रवीणता तथा माध्यम। सृजनात्मकता

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य "अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं हिन्दी उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (ग्वालियर नगर के विशेष संदर्भ में)" करना है। इस हेतु शोधार्थी द्वारा म.प्र. के ग्वालियर नगर के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 30–30 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध उपकरण के रूप में सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण –वकार मेंहदी द्वारा निर्मित सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण का प्रयोग किया गया है तथा हिन्दी उपलब्धि परीक्षण –एन.एन. दुबे द्वारा निर्मित उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकी में मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष के रूप में अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता एवं हिन्दी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है।

मुख्य शब्द

सृजनात्मकता एवं हिन्दी उपलब्धि.

प्रस्तावना

सृजनात्मकता एक स्व–अभिव्यक्ति की सुधार प्रक्रिया है। यह सृजनशक्ति अध्ययन, अनुभव द्वारा विकसित हो सकती है। सृजनशक्ति को विकसित करने वाले कुछ तत्व है यथा–चिन्तन, बौद्धिक स्तर, प्रवीणता तथा माध्यम। सृजनात्मकता के लिए मौलिकता तथा नवीन ढंग से कार्य करने की योग्यता नितान्त आवश्यक है साथ ही सृजनात्मक शक्ति के लिए उच्च बुद्धिलब्धि आवश्यक है। नवीन मौलिक तथा परम्परागत ढंग से हर कार्य करने का साहस केवल उच्च बुद्धिलब्धि के विद्यार्थियों में ही

होता है, परन्तु इसके अतिरिक्त निम्न बुद्धिलब्धि के व्यक्ति की सृजनशील हो सकते हैं।

बी.पी. शर्मा का कथन है कि "मौलिकता, आविष्कारिता तथा कल्पना कुछ प्रतिभाशाली बच्चो की ही बौद्धिक निधि नहीं है। सृजनात्मक चिन्तन प्रतिभाशाली बच्चों का ही एक विशिष्ट गुण है। इस मान्यता से शिक्षण में निष्क्रियता, परम्परावादिता व रुढ़िवादिता का प्रवेश होगा। जब शिक्षक यह समझता है कि सभी बच्चों में सृजनात्मक चिन्नत की क्षमता है।

भारत प्रजातांत्रिक देश है। योग्य प्रतिभाशाली नागरिकों द्वारा ही प्रजातंत्र की सुरक्षा संभव है। प्रजातांत्रिक संस्कार का यही प्रयत्न है कि प्रत्येक बालक को उसकी प्रतिभाओं, अभिक्षमताओं के विकास के लिए समान एव उचित अवसर प्रदान किये जाये। लोकतंत्र में शिक्षा का उचित रचनात्मक आदर्श है। ये नये प्रकार के ऐसे मनुष्यों का निर्माण करने का प्रयास करता है जो मानव जाति के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हो।

उपलब्धि

''उपलब्धि की अवधारणा ''सफलता एवं असफलता'' पर निर्भर करती है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों में व्यक्तित्व की महत्पूर्ण विषेशताओं में से एक है, यह विद्यार्थियों के विचारों, भावनाओं, संवेदनाओं एवं मूल प्रवृत्तियों से संबंधित होती है। शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है कि विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि से अभिप्रेरित करना जिसमें विद्यालय का शैक्षिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि धनात्मक रूप से विद्यालय के शैक्षिक वातावरण से प्रभावित होती है।''

हिन्दी उपलब्धि

हिन्दी भारत के हृदय की वाणी है और हृदय का कार्य है शरीर की समस्त शिराओं में रक्त का संचार करना। ज्ञान और तर्क से परे सहानुभूति को जो कोमल भूमि है, उसकी पगडंडियाँ देश भाषाओं से बनती हैं विदेशी भाषाओं से नहीं।

अतः हिन्दी भारतवर्ष के हृदय देश में स्थित करोड़ों नर–नारियों के मन और मस्तिष्क को खुराक देने वाली भाषा मानता है अर्थात् उनके हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने वाली भाषा! करोड़ों की आशा–आकांक्षा, अनुराग–विराग, रूदन, हास्य की भाषा।

विद्यार्थी सृजनशील तो होते हैं परंतु वर्तमान समय में अंग्रेजी भाषा का बोलबाला होने की वजह से हिन्दी में विद्यार्थी उतने पारंगत नहीं हो पाते हैं फिर भी कुछ विद्यालयों में हिन्दी के श्रेष्ठ शिक्षक होने की वजह से विद्यार्थियों को हिन्दी अच्छी तरह समझ आती है और वे उसमें उपलब्धि हासिल करते हैं। अशासकीय विद्यालयों में अंग्रेजी पर अत्यधिक जोर दिया जाता है तो विद्यार्थियों की हिन्दी उपलब्धि औसत दर्जे की ही रह जाती है।

शोध के उद्देश्य

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
2. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की हिन्दी उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाईं हैं:

1. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की हिन्दी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्ष

मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर के मुख्य क्षेत्र लश्कर, ग्वालियर एवं मुरार में स्थित 5 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के यादृच्छिक विधि द्वारा 30 छात्र एवं 30 छात्राओं का चयन किया गया।

शोध उपकरण

- **सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षणः** वकार मेंहदी द्वारा निर्मित सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण का प्रयोग किया गया है।
- **हिन्दी उपलब्धि परीक्षणः** एन.एन. दुबे द्वारा निर्मित उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया हैः

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

निष्कर्ष

परिकल्पना 1: अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 1: अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
अशासकीय छात्रों की सृजनात्मकता (30)	89.46	13.76	58	**1.38**
अशासकीय छात्राओं की सृजनात्मकता (30)	84.63	13.30		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

58 स्वतंत्रता अंश 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.01 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.38 इन दोनों से कम है अतः असार्थक है। अर्थात् अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

व्याख्या

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में स्मार्ट क्लासेस होती हैं और बहुरंगी चित्रों के माध्यम से उनको अध्ययन कराया जाता है तो छात्र एवं छात्राओं में बराबर से ही सृजनशील गुणों का निर्माण हो जाता है। विद्यालय में छात्र–छात्राओं को एक साथ ही गतिविधियां कराई जाती हैं इसलिए दोनों में समान रूप से सृजनात्मकता विकसित हो जाती है और वे एक समान कार्य करते हैं इसीलिए अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना 2: अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की हिन्दी उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

तालिका 2: अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की हिन्दी उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

विद्यार्थी	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
अशासकीय छात्रों की हिन्दी उपलब्धि (30)	64.76	12.46	58	**0.91**
अशासकीय छात्राओं की हिन्दी उपलब्धि (30)	67.46	10.51		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

58 स्वतंत्रता अंश 'टी' का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.01 होता है। गणना से प्राप्त 'टी' का मान 0.91 इन दोनों से कम है, अतः असार्थक है। अर्थात् अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की हिन्दी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

व्याख्या

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की हिन्दी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है क्योंकि वे समान रूप से ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं क्योंकि वहां जैसी हिन्दी पढ़ायी जाती है वैसे ही विद्यार्थियों की हिन्दी में उपलब्धि होती है। वैसे अशासकीय विद्यालय में अधिकांश विषय अंग्रेजी में पढ़ाये जाते हैं जिससे विद्यार्थियों की हिन्दी में उपलब्धि औसत ही होती है।

निष्कर्ष

- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं की हिन्दी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सुझाव

(1) विद्यार्थियों को विद्यालय में सृजनात्मक कार्य कराने चाहिए।

(2) शिक्षकों को भी विद्यार्थियों को अच्छे से अध्ययन करवाना चाहिए ताकि वे हिन्दी में उत्तम उपलब्धि प्राप्त कर सकें।

(3) विद्यार्थियों को पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेना चाहिए।

(4) शिक्षकों को विद्यार्थियों का समय–समय पर टेस्ट लेना चाहिए।

(5) अभिभावकों को समय–समय पर बच्चों से सृजनशील कार्य कराते रहना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. माथुर, एस. एस., (2005). *''शिक्षा मनोविज्ञान'',* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. गर्ग, ओ.पी., चतुर्वेदी, एस. (2007). *''अधिगम का मनो–सामाजिक आधार एवं शिक्षा''* अपोलो प्रकाशन, गाजियाबाद।
3. बोहरा, वंदना (2007). *''रिसर्च मैथडोलौजी''* ओमेक्स पब्लिकेशन, अंसारी रोड, नई दिल्ली।

4. गोअन एण्ड अदर्स, (1967). *क्रिएटिविटी इटस एज्यूकेशनल इम्पलीकेशन,* एन.बाई. जानविली एण्ड सन्स।

5. मेहदी बी, क्रिएटिविटी, इनटेलिजेन्स एण्ड एचीवमेन्ट, सम फाइन्डिग आफ रिसेन्ट रिसर्चस, *जनरल ऑफ इन्डियन, रिव्यू।*

6. डौडियाल, सच्चिदानन्द *''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र''* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।

****